द्वारावती विनाश कथा-वस्तु अपनी भाषा में प्रस्तुत करें।

द्वारवती विनाश उत्तराध्ययन सूत्र की सुखबोध टीका से संकलित है इसके लेखक आचार्य देवेन्द्र गणि हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से यह कथानक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है

द्वारिका नगरी में वसुदेव और देवकी के पुत्र कृष्ण राज्य करते थे। बलदेव और जराकुमार उनके दोनों बड़े भाई थे तथा शाब, प्रद्युमन आदि अनेक पुत्र। एक समय की बात है कि द्वारिका में भगवान अरिष्टनेमि आये। कृष्ण आदि अनेक यादव उनके दर्शन के लिए गये। धर्म कथा समाप्त होने पर अरिष्टनेमि ने यह भविष्यवाणी की कि— द्वीपायन ऋषि द्वारा धन-धान्य आदि से परिपूर्ण इस द्वारवती नगरी का नाश होगा शाब आदि कुमार मद्यपान कर ऋषि का अपमान करेंगे, जिसके फलस्वरूप द्वीपायन ऋषि अपने तेजो बल से इस नगरी को भस्म कर देंगे। जिसमें यादव वंश का सर्वनाश हो जायेगा। जराकुमार के बाण से कृष्ण का अंत होगा। अरिष्टनेमि के बातों को सुनकर यादव लोग बहुत चिन्तित हुए और कृष्ण ने नगर की सभी मदिरा कदम्ब वन को गुफा में फेक देने की घोषणा करा दी। जरा भी दुःखी मन से अपना घर छोड़कर वनवास चला गया।

छः महीने गुफा में पड़ी सुरा खूब पक कर सुस्वादु बन गई। संयोगवश शाबकुमार का शिकारी सुरा को पीकर अत्यंत संतुष्ट हुआ। उसने जाकर शाबकुमार को साथियों के साथ खूब सुरा पीया और पिलाया। सभी मदोन्मत्त हाथी की तरह मतवाले हुए पर्वत पर तपस्या में लीन द्वीपायन ऋषि को बहुत मारा-पीटा ऋषि बेहोश हो गये।

इधर कृष्ण के गुप्तचरों ने कृष्ण को सूचना दी कृष्ण ~~बलराम~~ बलदेव के साथ द्वीपायन मुनि को शान्त करने चले गये, द्वीपायन क्रोध से अंधा होकर काँप रहे थे। कृष्ण और बलदेव दोनों ने खूब समझाया लेकिन उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने कहा मैं तो द्वारवती को भस्म करने की प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। इधर कृष्ण सभी को तप उपवास तथा जिन भगवान की पूजा आदि करने का आदेश देते हो प्रद्युम्न, शांब आदि कुमारों में बहुत से लोगों के साथ अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले ली।

द्वीपायन ने देखा कि नगर वासी पूजा-अर्चना पाठ में लीन हैं तो वे शान्त रहे। किन्तु वे अपना अवसर देखते रहे। कुछ समय के बाद द्वारवती के लोगों ने समझा कि द्वीपायन शान्त हो गये। अतः लोग

निर्भय होकर पुनः आमोद-प्रमोद में समय बिताने लगे। द्वीपायन ने अवसर देखकर बहुत से सूखे पेड़ तथा लकड़ियों को एकत्रित कर भयंकर रूप से आग लगा दी। क्षण भर में आग चारों दिशा में फैल गयी, बड़े बड़े भवन टूट-टूट कर गिरने लगे। जानवर पशु आदि चिंघाड़ मारकर इधर-उधर भागने लगे। नगर में दारुण हाहाकार मच गया। कृष्ण भी बलदेव तथा माता-पिता, पुत्र सहित रथ पर सवार होकर भागने लगे। किन्तु रथ भी जलने लगा और दोनों भाइयों ने माता-पिता को छोड़कर भागना पड़ा।

आग ६ महीने तक जलता रहा, कृष्ण और बलदेव दक्षिण-मथुरा की ओर प्रस्थान करते हैं कृष्ण को वहाँ बहुत जोर से प्यास लगती है बलदेव पानी लाने चले जाते हैं कृष्ण वहीं प्यास से आकुल हो कर रेशमी वस्त्र ओढ़ कर सो जाते हैं इधर जराकुमार कृष्ण को चादर ओढ़े हिरण समझकर अपनी बाणों से प्रहार करता है कृष्ण चिल्लाते हैं जराकुमार को जब मालुम चला कि यह हिरण नहीं कृष्ण हैं तो दोनों बहुत दुःखी के साथ गले मिलते हैं और रुदन करने लगते हैं कृष्ण का अन्त समीप आ रहा था अतः उन्होंने जराकुमार को वहाँ से तुरन्त चले जाने को कहा।

इधर कुछ समय के उपरान्त बलदेव एक कमल के पत्ते पर पानी लेकर लौटते हैं कृष्ण को समझा कि वे सोये हुए हैं किन्तु जब कपड़ा उठाकर देखा तो समझा कि कृष्ण इस लोक में नहीं रहे और बलदेव मूर्छित हो गये। उन्होंने बहुत विलाप किया। बहुत समय तक वे उनके मृत शरीर को कंधे पर रखकर घूमते रहे अंत में दाह संस्कार कर कुशिया पर्वत पर उग्र तपस्या कर वे स्वर्ग सिधार गये।

अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि कवि देवेन्द्र मणि ने इस पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथा को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

—x—